Vol 5 Issue 11 August 2016

ISSN No : 2249-894X

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Review Of Research Journal

Chief Editors

Ashok Yakkaldevi
A R Burla College, India

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies,
Sri Lanka

Welcome to Review Of Research

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2249-894X**

Review Of Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Dr. T. Manichander

Advisory Board

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Fabricio Moraes de AlmeidaFederal
University of Rondonia, Brazil

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Xiaohua Yang
University of San Francisco, San Francisco

Karina Xavier
Massachusetts Institute of Technology (MIT), USA

May Hongmei Gao
Kennesaw State University, USA

Marc Fetscherin
Rollins College, USA

Liu Chen
Beijing Foreign Studies University, China

Mabel Miao
Center for China and Globalization, China

Ruth Wolf
University Walla, Israel

Jie Hao
University of Sydney, Australia

Pei-Shan Kao Andrea
University of Essex, United Kingdom

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Ilie Pintea
Spiru Haret University, Romania

Mahdi Moharrampour
Islamic Azad University buinzahra Branch, Qazvin, Iran

Titus Pop
PhD, Partium Christian University, Oradea,
Romania

J. K. VIJAYAKUMAR
King Abdullah University of Science & Technology,Saudi Arabia.

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences
Al. I. Cuza University, Iasi

REZA KAFIPOUR
Shiraz University of Medical Sciences
Shiraz, Iran

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

Nimita Khanna
Director, Isara Institute of Management, New Delhi

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

P. Malyadri
Government Degree College, Tandur, A.P.

S. D. Sindkhedkar
PSGVP Mandal's Arts, Science and Commerce College, Shahada [M.S.]

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

C. D. Balaji
Panimalar Engineering College, Chennai

Bhavana vivek patole
PhD, Elphinstone college mumbai-32

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut (U.P.)

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

Jayashree Patil-Dake
MBA Department of Badruka College Commerce and Arts Post Graduate Centre (BCCAPGC),Kachiguda, Hyderabad

Maj. Dr. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

AR. SARAVANAKUMARALAGAPPA UNIVERSITY, KARAIKUDI,TN

V.MAHALAKSHMI
Dean, Panimalar Engineering College

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University

Kanwar Dinesh Singh
Dept.English, Government Postgraduate College , solan

More.....

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.ror.isrj.org

ISSN: 2249-894X Impact Factor : 3.1402(UIF) Volume - 5 | Issue - 11 | August - 2016

Review Of Research

लोककला

नीतू खतरी[1], डॉ. बी.एस. गुलिया[2]

[1]ललित कला विभाग, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक, हरियाणा I.

[2]प्रोफेसर, ललित कला विभाग, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक, हरियाणा I.

सार

लोक कला एक ऐसा महत्वपूर्ण और मनोरंजक विषय है जो मानव जीवन में एक विशेष प्रकार का आन्नद, सजीवता, रोचकता और मधुरता भर देता है। लोक कला मानव हृदय की सुन्दर अभिव्यक्ति का नाम है। लोक कला शिक्षा और मन के विकास का एक मुख्य साधन है। लोक कला सारे संसार की भाषा है और शिक्षाओं के रूप में सारी शिक्षाओं की माता है।

मानव का ज्ञान सब चीजों से उत्तम है। इसलिए लोक कला से इसका विशेष सम्बन्ध है। मानव में लोक कला को परखने की शक्ति है। इसीलिए इसको पहचानता है इसका आदर करता है, लोक कला मानव को प्रेरणा देती है, सौन्द्रय प्रदान करती है, सुख और शान्ति देती है। यद्यपि मानव में लोक कला के प्रति आकर्षण है, परन्तु लोक कला का पूर्ण रूप सजग रहकर और चिन्तन करने से ही देखा जा सकता है, जिसके लिए शिक्षा तथा साधना का आवश्यकता है। लोक कला का उद्देश्य सारे जीवन को आनंदमय बनाना है और कलामय जीवन ही सारे विश्व को सुन्दर बना सकते है। लोक कला ही मानव की सांस्कृतिक स्मृतियों को सुरक्षित रखने का सर्वश्रेष्ठ साधन है।

प्रस्तावना–

मनुष्य ने जिस समय में प्रकृति की गोद में ऑखे खाली उस समय से ही उसने निर्माण कार्य के तारतम्य से अपने जीवन को सुखी और समृद्ध बनाने की चेष्टा की और इस निर्माण कार्य के फलस्वरूप उसने ऐसी कृतियों का सर्जन किया जो उसके जीवन को सुखद और सुचारू बना सके। इसी समय के मनुष्य की ललित भावना भी जाग उठी और उसने अपनी मूल भावनाओं को अनगढ़ पत्थरों के यंत्रों तथा तूलिका से टेढ़ी मेढ़ी कलाकृतियों के रूप में जीवन की कोमल भावनाएं और संघर्षमय जीवन की सजीव झांकियां, आदि मावन की कलाकृतियों के रूप में आज भी सुरक्षित है।

व्यापक रूप में, अनुभूति की अभिव्यक्ति को ही कला कहते हैं। इसका जन्म भी मानव जीवन के साथ ही माना जाता है। जिस प्रकार आदि काल से अब तक मानव जीवन का इतिहास क्रमबद्ध नहीं हैं परन्तु यह निश्चित है कि मानव की सहचरी के रूप में कला सदा ही उसके साथ रही है। किसी देश अथवा जाति की सभ्यता के विषय में पूर्ण ज्ञान प्राप्त करने के लिए कला की सहायता बहुत आवश्यक है। इसी के माध्यम से रहन–सहन का ढंग आदि जाना जा सकता है। मोहन जोदड़ो और हड़प्पा की खुदाई में जो कुछ कलावेश मिले है उन्हीं के आधार पर उसी संस्कृति का अनुमान लगाया जा सकता है।

लोक कला को सही समझाने के लिए हमें अपनी अतीत की संस्कृति में झांकना पड़ेगा। इस कथन में डॉ हरद्वारी लाल शर्मा का कथन है कि ''संस्कृति वह सम्पदा है जो प्रकृति की अन्नत सम्भावनाओं से अर्जित की है।''

हमारे जातीय त्योहार का सांस्कृतिक पक्ष लोक मानव में प्राचीन संस्कृति की छाप अंकित करके उसे दृढ़ बनाने में समर्थ होता है।

लोक चित्रण में कृत्रिमता का कोई स्थान नही है, यह तो हृदयगत

उद्गार है। समतल भूमि पर अथवा मकानों की भित्तियों तथा कागजों पर चावल के लेप, गेरू, कोयले और खाड़िया के रंगो से यह चित्रण प्रस्तुत किया जाता है।

लोक कला मानवीय भावनाओं का सुन्दर प्रदर्शन है जो सांस्कृतिक उन्नति के साथ–साथ उन्नति करती चली आ रही है तथा संस्कृति के किसी भी अंग ने इतनी उन्नति नहीं की जितनी की कला ने की है।

लोक कलाएं हमारे देहात के जनमानस के तमाम परम्परागत तथा कलात्मक कार्य है जो पीढ़ी–दर–पीढ़ी हमारे समाज में विभिन्न रूपों में आज भी जिन्दा है।

लोक कला का अभ्यूदय साहित्य के साथ ही माना गया है। वैदिक युग में दो प्रकार की भाषा मानी गई है। मुख्य संस्कृत, जो पढ़े लिखे लोगों की थी तथा लोकभाषा। लोक में अपभ्रंश तथा प्राकृत भाषा बोली जाती थी । संस्कृत में साहित्य रचना के साथ–साथ वहां की लोक भाषा भी प्रगति पर थी तथा प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में संस्कृत साहित्य पर उसका प्रभाव रहा। लोक कला में अनुसंधान का कार्य जब से प्रारम्भ हुआ है तभी से लोक कला तथा लोक साहित्य के भण्डार का पता चला है। लोक कला का विकास विभिन्न रूपों में हमारे सामन आया है । उसका रूप दैविक संकेतों तथा परम्परागत विश्वासों पर आधारित है तथा दूसरा सामाजिक रीति रिवाजों पर आधारित है । लोक कला का पहला रूप प्रतीकात्मक है क्योंकि उसमें विभिन्न शक्तियों तथा देवी देवताओं आदि का प्रतीकात्मक चित्रण होता है। रीति–रिवाजों में प्रतीक नहीं बनते

बल्कि स्पष्ट रूप से सरलता–पूर्ण कुछ लोक चित्रण होता है ।

कला की उन्नति में लोक कला का भी बहुत महत्व रहा है। कला विकास तो राजाश्रयो में पेशेवर कलाकारों द्वारा हुआ है परन्तु लोक कला का विकास घरों के आंगनो में, ग्रामों में, अशिक्षित जातियों में, बिना कोई प्रसिद्धि के शान्त व अबोध रूप से, धार्मिक तथा सांस्कृतिक व पारिवारिक परम्पराओं के साथ बिना बौद्धिक पुट के होता आ रहा है । लोक कला को किसी आश्रय, प्रलोभन या प्रोत्साहन की आवश्यकता नहीं होती । वह तो स्वच्छन्दता तथा मौलिकता के साथ सदा प्रगति करती है क्योंकि उसका सम्बन्ध तो प्राणी मात्र से है

कला की परम्परा प्राचीन काल से भारत में दिखाई पड़ती है । इसी के द्वारा आज भी हम समाज की परम्परा, सभ्यता एवं भावना आदि का इतिहास क्रमबद्ध रूप में पाते हैं ।लोक कला को परम्परा से आगे बढ़ाने का श्रेय हमारी ग्रामीण जनता को दिया जाता है जिसके कारण इसे विश्वकला की प्रगतिशील भावनात्मक धारा के साथ लिया गया है और साथ ही इसने उस ओर प्रगति भी की है ।

लोक शब्द का अभिप्राय मनुष्य समाज के उन वर्गों से है जो अभिजात्य संस्कार, शस्त्रीयता और पंडित्य की चेतना अथवा अहंकार से शून्य है और जो एक परम्परा के प्रवाह में जीवित रहता है । ऐसे लोक की अभिव्यक्ति में जो तत्व मिलते हैं, वे लोक तत्व कहलाते हैं । लोक कला का उदय समाज के रीति रिवाजों पर अवलंबित है क्योंकि यह परम्परागत धाराओं, विश्वासों, आस्थाओं, संकेतों पर आधारित है । यह समाज के रीति रिवाजों, विवाह, धार्मिक पूजन इत्यादि पर घरों में चित्रित की जाती है । लोक कला विशेषकर पर्व के अवसरों पर दीवारों एवं आंगनों मे बनाए जाते हैं । दीवारों पर बने चित्रों से विभिन्न जातियों की संस्कृति व परम्परा का ज्ञान होता है । ये सभी आकृतियां लोक कला का ही मुख्य रूप हैं ।

भारत वर्ष में पृथ्वी को धरती माता कहा गया है, मातृभूमि तो इसका सांस्कृतिक तथा विकसित रूप है । इसी धरती माता का श्रद्धा से अलंकरण करके लोक मानव ने अपनी आत्मीयता का परिचय दिया । विभिन्न प्रान्तों में विभिन्न नामों से धरती को अलंकृत किया जाता है । गुजरात में इसे 'साथिया' राजस्थान में इसे 'माड़ना' महाराष्ट्र में रंगोली, उत्तर–प्रदेश में चौक पूरना, विहार में अहपन, बंगाल में अल्पना, गढ़वाल में आपना और हरियाणा में रंगोली कहते हैं ।

इसके विभिन्न रंगों से या उसके चूर्ण से भूमि पर, घर के आंगन में, द्वार पर या पूजा के स्थान पर एक आलेखन किया जाता है जिसका कोई शास्त्रीय तरीका नहीं है बल्कि परम्परागत् रूप से चली आ रही एक शैली है जिसका उद्देश्य भूमि को रंगकर सौन्दर्य प्रदान करना है । यह रचना घर–घर में इसी प्रकार सम्पूर्ण भारत वर्ष के कोने – कोने में होती है ।

लोक कला का सम्बन्ध त्योहारों से बंधा हुआ है । भारतवर्ष में त्यौहारों के अवसर पर अनेक रूपों के लोक कलाओं के दर्शन होते हैं । मालवा, निमाड़, गुजरात, राजस्थान, उत्तर–प्रदेश और हरियाणा आदि स्थानों के त्योहारों की आत्मा मूलतः लोक कलाओं से ही जुड़ी हुई । दीवाली, करवा–चौथ, गणेश पूजा, हाई अष्ठमी, श्रावणी एवं अन्य कई त्यौहारों पर घर के आंगन तथा दीवारों पर पूजा के लिए चित्र बनाना, घर को अल्पना के रूप में रंगों से चित्रकारी करना आदि परम्परागत लोक कला की अभिव्यक्ति सर्वत्र दर्शनीय है ।

हरियाणा में सॉझी गोबर से दीवार पर चित्रित की जाती है। यह नवरात्रि में देवी का स्वरूप है जिसकी पूजा परम्परागत रूप से होती आई है। इसमें भी मानव का मांगल्य होता है। चौक पूरने में दैविक शक्ति का मांगल्य के लिए आह्वान किया जाता है। अहोई अष्टमी के त्यौहार पर गेरू से कुछ आकृतियॉ बनाई जाती हैं जिनमें एक चौकोर बड़ी आकृति होती है तथा उस आकृति के अंदर छोटी–2 विभिन्न आकृतियॉ बनाई जाती हैं इसे भी एक देवी का रूप माना जाता है। इसकी पूजा में पुत्रों के मांगल्य की कामना होती है। इसी प्रकार करवा–चौथ पर भी कुछ आकृतियॉ बनाकर पूजा होती है, जोकि सुहागन स्त्रियॉ अपने पति के मांगल्य के लिए करती हैं।

इन लोक चित्रों में भी एक प्रकार की लय, गति, रंग आदि की समुचित योजना होती हैं। रंगों के संयोजन पृष्ठ भूमि को देखते हुए ही किया जाता है। यदि पृष्ठ भूमि लाल है तो उस पर खड़िया से सफेद रेखाओं से आकृति बनाई जाती है। सफेद पृष्ठ भूमि पर गेरू या लाल व पीले रंगों से चित्रण किया जाता है। नीलें रंग का भी प्रयोग लोक चित्रों में बहुत मिलता है। चावल, आटा और हल्दी तो लगभग सारे देश के लोक चित्रों में प्रयोग मिलता है। ये चित्र धार्मिक भावना व सादगी से ओत–प्रोत होते हैं। इन्हे देखते ही मन में श्रद्धा व धर्म की भावना जागृत होती है। इन चित्रों में देवी देवताओं के साथ–2 पशु–पक्षी का भी चित्रण होता है। पशु व पक्षी हमारे यहां इसलिए भी शुभ माने गए हैं कि यह देश कृषि प्रधान है और कृषि में जो योगदान पशु व पक्षियों का है वह भुलाया नहीं जा सकता। वैसे भी पक्षियों को सादगी तथा स्नेह का प्रतीक माना जाता है।

हरियाणा प्रदेश की लोक कला शैली मूलतः धर्माश्रित है। हरियाणा हिन्दू धर्म की पूजा करते हैं तथा विष्णु की भी पूजा लोक कला के माध्यम से करते हैं क्योंकि ''विष्णु का ही दूसरा नाम सूर्य है।'' हरियाणा में कुछ जगहों पर अमावस्य के दिन पूजा की जाती है तथा धूपबत्ती लगाई जाती हैं अमावस्य के दिन पूजा के लिए कोट की आकृति बनाई जाती है। कुछ स्थानों पर पीपल की पूजा की जाती है। इसके ऊपर ब्रह्ममा, विष्णु व महेश का निवास माना जाता है। पीपल के वृक्ष को शनिवार को पूजा जाता है क्योकि इस दिन सभी देवताओं का इस पर निवास होता है। ''इस वृक्ष को दाम्पत्य–प्रेम को बढ़ाने वाला, संतान देने वाला तथा प्रेत बाधा से मुक्ति प्रदान करने वाला माना जाता है।'' जीवन में धर्म का इतना महत्व हरियाणा की जनता के अन्दर देखने को मिलता है जो कि देश के दूसरे प्रदेशों में इतना नहीं है ।

हरियाणा में जो–जो लोक कलाएं उपलब्ध हैं वे लगभग उसी रूप में पड़ोसी प्रदेशों में भी पाई जाती हैं। उदाहरणस्वरूप आंगन सज्जा की लोक कलाएं, भित्ति सज्जा की लोक कलाएं। जैसे – मेंहदी लगाना, गोदने गुदवाना आदि ऐसी लोक कलाएं हैं जिनमें बहुत अधिक साम्य पड़ौसी प्रान्तों में पाया जाता हैं। यह बात अलग है कि भिन्न राज्यों में उनके अलग–2 नाम हो जाते हैं।

गांव की महिलाओं द्वारा चूल्हें, हारे, कोठी एवं कुठले बनाए जाते हैं। चूल्हें पर भोजन तैयार किया जाता है। हारे में खिचड़ी, दाल, सरसों का साग, पानी एवं दूध गरम किया जाता है। कोठी गांव में स्टोर की जगह काम आती है। यह मिट्टी से बनाई जाती है। इन सभी वस्तुओं को बनाने के लिए गोबर, मिट्टी, घोड़े की लीद व तूड़ी मिलाकर मिट्टी तैयार की जाती है। इन्हे सजाने के लिए मिट्टी में विभिन्न फूल–पतियों की आकृतियां बनाई जाती हैं। कुठला अन्न डालने के काम आता है। उसके तल के साथ एक सुराख छोड़ा जाता है, जिसमें से अन्न इच्छानुसार और आवश्यकतानुसार निकाल लिया जाता है। ऊपर मोटा द्वार होंता है, जिसमें से अन्न डाला जाता है। कुठले के स्थान पर आजकल लोहे की चद्दर का बना हुआ ठेका या टंकी आने लगी हैं। ऊपर लिखित सभी के ऊपर मिट्टी से लीप कर गेरू से लोक कला के नमूने देखने को मिलते हैं तथा हरियाणा प्रान्त के पूर्व भाग के लोक कला में तथा पश्चिम भाग की लोक कला में भिन्नता देखने को मिलती है।

उसी प्रकार भिन्नता उत्तरी भाग तथा दक्षिणी भाग में देखने को मिलता है। लोक कला के इस प्रकार के चित्रों को देखने पर हमें हरियाणा की लोक कला शैली पर बाह्य प्रभाव स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है।

इसी प्रकार सांझी बनाने की लोक कला हरियाणा राजस्थान, उतरप्रदेश में समान रूप से प्रचलित हैं। सांझी के अवसर पर गाए जाने वाले गीतों में भी समानता है। सांझी के गीतों में भाव तो एक ही है, किन्तु भाषा बदल गई है। वह अवध के इलाके में अवधी, ब्रज के इलाकों में ब्रजभाषा, राजस्थान के इलाको में राजस्थानी और हरियाणा में हरियाणवी भाषा हो गई है। अतः इन गीतों में पाए जाने वाला चित्रण और विचारधारा समान ही है। जैसे–'लोक कथाओं में मनोरंजन प्रधान होता है।'

छापा, तिलक और बिन्दी लगाने की परम्पराएं प्रत्येक राज्य में पाई जाती है किन्तु उनके नमूनों में थोड़ा अन्तर अवश्य ही रहता है। उत्तर प्रदेश, राजस्थान, हरियाणा में चुन्नी लंहगा उसी सम्मान और आस्था से पहना जाता है और इसकी छपाई कढ़ाई भी लगभग समान ही रहती है। हरियाणा की लड़कियों द्वारा पहने जाने वाले सलवार जम्फर और उनकी कढ़ाई, कशीदाकरी पंजाब की वेशभूषा के पूर्णतः अनुकूल ही है। औढ़ने बिछाने के वस्त्र प्रायः समान हैं। राजस्थानी के पीलिए, पोमचे, चूंदडी हरियाणा में भी उसी आदर और सम्मान के साथ पहने जाते हैं। फलतः इनमें यह भेद करना कि कौन सा राज्य का है, बड़ा कठिन है। पशु सज्जा से सम्बधित वस्त्र ओर आभूषण, पाल, आथर, चौरासी, टाली, घुंघरू समान रूप से राजस्थान और हरियाणा में उपलब्ध है।

यह सत्य कहा गया है कि साहित्य समाज का दर्पण है। उसी प्रकार लोक कला भी समाज का एक दर्पण है। किसी भी युग तथा किसी भी स्थान की लोक कला पर उस युग तथा उस स्थान विशेष की सामाजिक अवस्था का विशेष प्रभाव पड़ता है।'

'लोक शब्द का अर्थ जन मानस से है जो नगरों व ग्रामों में रहती हैं तथा जिस का व्यवहारिक ज्ञान पोथियों पर आधारित नहीं है। नगर में परिष्कृत रूचि सम्पन्न एवं सुसस्कृत समझे जाने वाले लोगों की अपेक्षा ग्रामीण जन अधिक सरल और अकृत्रिम जीवन के अभ्यासी होती हैं तथा परिष्कृत रूचि सम्पन्न व्यक्तियों की विलासिता और सुकुमारता को जीवित रखने वाली आवश्यक वस्तुएं उत्पन्न करते हैं।'

मिट्टी की सहायता से बनाए जाने वाले पात्र मूर्तियां, खिलौने भी काफी हद तक समान ही है, किन्तु उनमें थोड़ा बहुत अन्तर भी परिलक्षित हो जाता है। उदाहरण स्वरूप पंजाब का चरखा हरियाणा के चरखे से नहीं मिलता किन्तु राजस्थान का चरखा हरियाणा के चरखे के समान है।

अतः हम कह सकते है कि इन पड़ौसी प्रदेशों ने अपने साथ लगने वाले प्रान्तों की लोक कला को जहां प्रभावित किया है वहां वे स्वयं भी प्रभावित हुए हैं, कुछ अपना इन्होंने उन्हें दिया है और कुछ उनका इन्होने ले लिया है। पगड़ी पंजाब में बांधी जाती है और हरियाणा में भी, उत्तर प्रदेश में भी, उत्तर प्रदेश के साथ ही राजस्थान में भी, किन्तु राजस्थान और हरियाणा में बराबर बांधा जाता है। तुर्रे वाला साफा हरियाणा और राजस्थान में बराबर बांधा जाता है। इनका रंग केसरिया या हरा जगत प्रसिद्ध है। दोनों प्राप्तों में सामान रूप से इस रंग को आदर के साथ देखा जाता है। मारवाडी सेठों की पगड़ी उत्तर प्रदेश के सेठों से काफी मिलती है। इसके पीछे एक कारण यह भी हो सकता है कि परिवार जब अपने प्रान्त को छोड़कर दूसरे प्रान्त में जाता है तो अपने रीति–रिवाज, कला और संस्कृति साथ लेकर जाता है। कालान्तर में उसकी कला में और संस्कृति में उसके निवास स्थान की संस्कृति और कला को खोजा जा सकता है।

हरियाणा की लोक कला राजस्थान से अधिक लिती है। इसका आशय यह भी हो सकता है कि हरियाणा के अधिंकाश परिवारों के पूर्वज राजस्थान के रहे होगें। हरियाणा की लोक कला बहुत सी बातों में अपने पड़ोसी प्रान्तों की लोक कला से भिन्न भी है, किन्तु वह भिन्नता इतनी अधिक नहीं है कि हमें खटकने लगे। लोक कला के विकास में महिलाओं का योगदान अक्षुण्ण रहा है। विवाह–शादियॉ इन प्रान्तों में परस्पर होती है, होती थी और होती रहेगी। इसलिए लोक कला को लेकर यह कहना कि अमुक कला राजस्थान का ही है और अमुक हरियाणा का ही है, मेरी दृष्टि से अपूर्णता का परिचायक है। पता नहीं कि कब हरियाणा की बालिका यहां लोक कला, सांझी कला को लेकर राजस्थान गई हों या राजस्थान की बालिका यहां आई हों, पूर्ण निश्चय से नही कहा जा सकता है क्योंकि सांझी लोक कला के नाम से ही ज्ञात होता है कि यह सभी जन की सांझी लोक कला है।

वर्तमान स्थिति का अवलोकन करते हुए उनके मांडने चीतणे के ढ़ंग को देखते हुए यह अनुमान लगाया जा सकता है कि यह लोक कला राजस्थान की है या हरियाणा की है, तथा अमुक उत्तर प्रदेश व अमुक पंजाब की है। सुविधा की दृष्टि से प्रांत–2 की अलग–2 लोक कला का अध्ययन आवश्यक हो गया है। अन्यथा लोक कला तो समस्त भारत की एक ही है। लोक तत्व कम परिवर्तनशील हैं। इसलिए यह कला, लोक कला न कहलाकर परिष्कृत कला की कोटि में गिनी जाती है।

अतः निष्कर्षतः यही कहा जा सकता है कि लोक तत्वों के मुखर होने से ही लोक कला है। इसकी आड़ी, बांगी, तिरछी लकीरें उसके उत्स से आज तक आड़ी बांगी ही हैं। उनमें शुद्धता, परिमार्जितता, परिष्कृतता नहीं है, इसलिए ये अपने मूल में आज भी ज्यों की त्यों बनी हुई है। 'ये परम्पराएं जनता की सभी आवश्यकताओं की पूर्ति करते हुए इनके लोकधर्मी स्वरूप को बनाए रखती है।' तथा लोक मानस विवेक पूर्वी व रहस्यशील होता है। लोक कला में समय तथा त्योहार आदि की रसात्मक झलक होती है। जैसे थापा व मेंहदी विवाह का प्रतीक है। इस लोक कला की आत्मा हैं। यह वह अध्यात्मिक गुण है जिसमें कृति का स्थाई मूल्य निहित रहता है।

अतः लोक कला ही जनता की भाषा है तथा लोक कला हमारी संस्कृति की पहरेदारी है तथा लोक कला, लोक गीतों का मूलाधार है।

इन लोक कलाओं की निर्मित में रंग में थोड़ी भिन्नता अवश्य ही रहती है, किन्तु उनके मूल में जो तत्व हैं वे ज्यों के त्यों रहते हैं। उदाहरण के लिए गूगे के थापे में गूगे का चित्र, सांपों के चित्र, हरियाणा, राजस्थान और उत्तर प्रदेश में सम्मान रूप से उपलब्ध हैं। देव उठणी एकादशी के थापे में सात बहू एवं सात–सात लड़कों के चित्र भी समान रूप से उक्त प्रान्तों में पाए जाते हैं। अहोई अष्टमी के थापे में स्याउ माता का चित्र लंगड़ी गउ का चित्र भी समानता का ही द्योतक है। विभिन्न उत्सवों एवं पर्वों पर बनाए जाने आंगन सज्जा के नमूने व बिजनों पर बनी लोक कला भी समान दी हैं। जो वहां संस्कृति में निहित होती है। संस्कृति एक बहती हुई नदी है न जाने कितने नदी और नाले अपनी अस्मिता खोकर उसमें लीन हो जाते हैं। लोक कला हमारे जीवन में अहं भूमिका निभाती हैं, इसलिए कहा गया है कि 'कला का उद्भव अनुभूति को ऐसा रूपाकार देने में होता है जो संप्रेषणीय है।

यद्यपि शिक्षा के अत्यधिक प्रचार–प्रसार ने इन कलाओं को मृत प्रायः ही कर दिया है। पढ़े–लिखे परिवारों में ये मात्र साज सज्जा

का साधन हैं। इनका सामाजिक महत्व प्रायः लुप्त होता जा रहा है। पढ़ी लिखी बालिकाएं इन कलाओं को उतनी आदर व श्रद्धा नहीं दे पाती है जितनी की हमारी माताजी व दादीजी दे रही हैं। हमें इनकी सामाजिक संगठन की शक्ति को पहचानना होगा, तभी हमारा कल्याण संभव है और लोक कलाओं का प्रसार भी सम्भव है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1.अग्रवाल, एस.डी.; हरियाणा : सामान्य ज्ञान; रमेश पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली; 1995
2.यादव, के0सी0; हरियाणा : ऐतिहासिक सिंहावलोकन ।
3.संगवान, गुणपाल; हरियाणावी लोकगीतों का सांस्कृतिक अध्ययन ।
4.शर्मा, पूर्णचन्द; हरियाणा की लोकधर्मी नाट्य परम्परा ।
5.सिंह, विजयेन्द्र, हरियाणा के सांगों में सौन्दर्य निरूपण ।
6.'मंगल', लालचन्द्र गुप्त; हरियाणा का लोक साहित्य ।
7.यादव, के0सी0; हरियाणा : इतिहास का लोक साहित्य ।
8.शर्मा, पूर्णचन्द; हरियाणा की लोकधर्मी नाट्य परम्परा ।
9.सिंह, विजयेन्द्र; हरियाणा के सांगों में सौन्दर्य निरूपण ।
10.शारदा, साधुराम; हरियाणाः एक सांस्कृतिक अध्ययन; प्राक्कथन ।
11.सांगवान, गुणपालः हरियाणावी लोकगीतों का सांस्कृतिक अध्ययन ।
12.शर्मा, पूर्णचन्द्र; हरियाणा की लोकधर्मी नाट्य परम्परा ।
13.प्रभाकर, देवीशंकर; हरियाणाः एक सांस्कृतिक अध्ययन ।
14.आचार्य, भगवानदेव; वीर भूमि हरियाणा ।
15.भान, सूरज; हरियाणा का सनत साहित्य ।
16.धनकर, रीता; हरियाणा का लोक संगीत ।
17.लाल, उषा; हरियाणा की हिन्दी कहानी ।
18.'मानव', रामनिवास; हरियाणा में रचित सृजनात्मक हिन्दी साहित्य ।
19.पूनियां, महासिंह; हरियाणा के हिन्दी प्रबन्धकाव्य ।
20.समकालिन कला, ललित कला अकादमी की पत्रिका, नवम्बर 1986 / मई 1987

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- Directory Of Research Journal Indexing
- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- DOAJ
- EBSCO
- Crossref DOI
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Review Of Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-
413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com